विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग अष्टम् विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

ता:-०७/१०/२०२०(एन.सी.ई.आर.टी.पर आधारित)

गद्यांश: -

यत् किञ्चित् अपि धर्मभावनया विधीयते , मानवहृदि स्थिरतया तन्निधीयते , वृक्षान् मा छिन्धि इति एतावत् प्रभावशाली न भवेत् यथा ' वृक्षेषु देवता: वसन्ति , तस्मात् तन्मा छिन्ध।एवमेव वृक्षा: रात्रौ 'कार्बनडाइऑक्साइड' इति दूषितं वायु: प्रजहाति , अत: तत्र न गन्तव्यम् ।परं वैज्ञानिकं तथ्यमिदमवगन्तमक्षमै: जनैरेतत् सुग्रहं यत् "रात्रौ सुप्रान् पादपान् मा तुद् " । अतएव संस्कृत वाङ्मये अश्वत्थतुलसीवट बिल्वादय: सादरं संपूजिता:।

अर्थ- जो कुछ भी धर्म की भावना से की जाती है,मानव हृदय मे स्थिरता से घर कर जाती है, वृक्ष मत काटो यह इतना प्रभावशाली नहीं है जितना 'पेडों पर देवता रहते हैं,इसलिए उसे मत काटो'।इसी तरह पेड़ रात में 'कार्बनडाइऑक्साइड ' नामक दूषित वायु त्याग करते हैं , अत: वहां नहीं जाना चाहिए। लेकिन वैज्ञानिक इस तथ्य को जानने में असमर्थ लोगों के द्वारा स्पष्ट कर दिया गया कि "रात में सोये हुए पौधे को मत तोड़ो । इसलिए संस्कृत वाङ्मय में पीपल, तुलसी, बरगद ,वेल आदि आदर सहित पूजे जाते हैं।